THE NARRATIVE

जनजातीय टाइम्स

वनवासी विषयों पर केंद्रित साप्ताहिक पुस्तिका

WWW.THENARRATIVEWORLD.COM

अनुक्रमणिका

क्रमांक संख्या | पृष्ठ संख्या

1. जनजातीय टाइम्स (साप्ताहिक अपडेट) 03

2. डीलिस्टिंग अभियान (साप्ताहिक अपडेट) 04

3. जनजातीय वीर (वीर सुरेंद्र साय) 05

4. जनजाति विशेष (कोच जनजाति) 06

5. जनजाति संस्कृति (टुसू पर्व) 07

जनजातीय टाइम्स

WWW.THENARRATIVEWORLD.COM

दिनांक : 12 - 18 दिसंबर 2022

- झारखंड में इस्लामिक जिहादी अंसारी ने जनजातीय युवती से निकाह कर की उसकी हत्या, 12 टुकड़ों में मिली लाश

- सतना में जनजातीय महिला से ढाबा संचालक ने किया दुष्कर्म, आरोपी गिरफ्तार

- विदिशा के मदरसे में पढ़ते मिले शासकीय विद्यालय के 7 जनजाति बच्चे

- हजारीबाग के अंदरूनी गांव में जनजातीय समूह के सामने पीने के पानी की किल्लत, गंदा पानी पीने को मजबूर

विस्तृत रिपोर्ट हेतु विज़िट करें : www.thenarrativeworld.com

डीलिस्टिंग अभियान

WWW.THENARRATIVEWORLD.COM

दिनांक : 12 - 18 दिसंबर 2022

- मध्यप्रदेश में डीलिस्टिंग को लेकर होने वाली महारैली, जनजातीय समाज होगा एकजुट

- बैतूल में डीलिस्टिंग रैली के लिए सघन जन संपर्क अभियान शुरू, बड़ी संख्या में लोग हो रहे शामिल

विस्तृत रिपोर्ट हेतु विज़िट करें : www.thenarrativeworld.com

THE NARRATIVE

जनजातीय वीर

(स्वाधीनता संग्राम में नेतृत्वकर्ता वनवासी योद्धाओं की कहानी)

WWW.THENARRATIVEWORLD.COM

वीर सुरेंद्र साय (1809 - 1884)

- महान क्रांतिकारी वीर सुरेंद्र साय का जन्म संबलपुर के खिंडा नामक गाँव में 23 जनवरी, 1809 को हुआ था.
- ब्रिटिश ईसाई सत्ता की कुनीति एवं जनजातियों के साथ होने वाले अन्याय के विरुद्ध सुरेंद्र साय ने क्रांति की रणनीति बनाई.
- सुरेंद्र साय ने 1827 में 18 साल की आयु में अंग्रेज ईसाइयों के विरुद्ध विरोध करना शुरू कर दिया था.
- उन्होंने 1857 के स्वातंत्र्य समर से पहले ही विदेशी ईसाई शासन के विरुद्ध लड़ाई शुरू कर दी थी और विद्रोह के शांत होने के बाद भी इसे जारी रखा.
- गुरिल्ला युद्ध और घुड़सवारी में प्रशिक्षित सुरेंद्र साय को आम समाज अपना नेता मानता था. उन्हें जमींदारों के साथ-साथ जनजातियों का भी समर्थन प्राप्त था.
- संबलपुर में अंग्रेजों पर एक खुले हमले में, साय को पकड़ा गया और 1840 से 1857 तक 17 साल की कैद हुई.
- 1857 में, क्रांति के दौरान, रामगढ़ बटालियन के सिपाहियों ने हजारीबाग जेल को तोड़ दिया, जहां साय को रखा गया था और उन्हें और अन्य लोगों को मुक्त कर दिया.
- 1864 में, साय को धोखा देने वाले एक जासूस की मदद से अंततः उन्हें अंग्रेज ईसाइयों ने पकड़ लिया.
- वीर सुरेंद्र साय ने 28 फरवरी, 1884 को असीरगढ़ जेल में अपनी अंतिम सांस ली और इस मां भारती के अनन्य भक्त ने अपने पूरा जीवन स्वाधीनता के लिए समर्पित कर दिया.

THE NARRATIVE

जनजाति विशेष

कोच जनजाति - पूर्वोत्तर भारत

- कोच जनजाति उत्तर-पूर्वी भारत का प्रमुख जनजातीय समूह है. इनका प्रमुख निवास स्थान असम, पश्चिम बंगाल, मेघालय, बिहार और त्रिपुरा में है.
- कोच जनजाति की मूल भाषा कोच है जो तिब्बो-बर्मन भाषा परिवार से है. यह अब धीरे-धीरे विलुप्त हो रही है.
- कामरूप के पाल वंश के पतन के बाद 16 वीं शताब्दी में एक कोच शासक ने कोक वंश की स्थापना की, जिनसे ही इस जनजाति का संबंध माना जाता है.
- कोच जनजाति समूह पूर्वोत्तर के नर नारायण भक्ति संत श्रीमंत शंकरदेव से प्रभावित अत्यधिक प्रभावित हैं.
- कोच जनजाति समूह छोटे गाँवों में रहते हैं, जो कुलों में विभाजित हैं. उनके विभिन्न भौगोलिक समूहों को 'जय' के नाम से जाना जाता है.
- कोच जनजाति के लोग मिट्टी या बांस की बनी हुई छतों के साथ झोपड़ियों में रहते हैं. इनकी जीवनशैली काफी उन्नत मानी जाती है.
- इनके लिए अपना निवास स्थान अत्यधिक पवित्र होता है. व्यापक रूप से गांव और घर के देवताओं की परिक्रमा करते हैं. वे अग्नि, जल और जंगल के देवताओं की पूजा करते हैं.

THE NARRATIVE

जनजाति संस्कृति

टुसू पर्व - झारखंड

- सूर्य के उत्तरायण यानी सूर्य का धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश शुभ माना जाता है. इस पर्व को झारखंड के जनजातीय समाज में टुसू पर्व के रूप में मनाया जाता है.
- टूसू का शाब्दिक अर्थ कुँवारी है. इस पर्व के इतिहास का कोई ठोस लिखित स्त्रोत नहीं है लेकिन इस पर्व में बहुत सी धार्मिक गतिविधियां होती हैं और यह अत्यंत ही रंगीन और जीवन से परिपूर्ण त्यौहार है.
- इस पर्व के दिन पूरे जनजाति समाज द्वारा अपने नृत्य संगीत का आयोजन किया जाता है.
- मकर संक्रांति की सुबह नदी में स्नान कर उगते सूरज की प्रार्थना करके टुसू (लक्ष्मी/सरस्वती) की उपासना की जाती है.
- यह आस्था का पर्व श्रद्धा, भक्ति और आनंद से परिपूर्ण कर है, जिसे जनजाति समाज अत्यंत ही उल्लास से मनाता है.
- इस पर्व के अवसर पर स्थानीय जनजाति लोग अपने घरों में गुड़, पीठा और चावल आदि बनाते हैं. व्यंजन में श्रीफल का भी प्रयोग होता है.